:- भाषण - स्वतंत्रता दिवस (राजस्थानी) :-

मोतियां सूं मूंगा म्हारा हेताळू अतिथिगण अध्यक्ष अर मंच माथै विराजियोड़ा म्हारे पून्यू रे चाँद जिसा मेहमान मैं आपरे साम्है खड़ो होय न स्वतंत्रता दिवस रे माथै दो शब्द कैवणो चाहूं हूं। भूल चूक होवे तो माफ करना।

जेड़ो की आप सगळा ने पतो ही है कि आज आपणो देश ... वा स्वतंत्रता दिवस मनावण जा रियो है। इणी कड़ी रे माय आपा सगळा भी आज ओ पर्व मनावण जा रिया हा। इण दिन रो आपरे मूल्क मे घणो मेहत्व है। 15 अगस्त सन 1947 सूं पैला इण मूल्क माथै गोरे लोगो रो राज हुतो जिण सूं इण मूल्क रा लोग घणा दु:खी हुता। आधा दिन वा गोरा लोग इण मूल्क रा लोगो माथे घणो अत्याचार करता हा। जिणसूं बचावण खातिर इण मुल्क रा कई वीर योद्धाओ ने उणरो सामनो करियो और हंसता हंसता अपरे प्राणो रो बलिदान देय न इण मूल्क ने आजाद करायो आज ही रे दिन 15 अगस्त सन 1947 री आधी रात मे दिल्ली रे माय लाल किले माथै ओ तिरंगो ने फहरा ने इण मूल्क रे आजाद होणे री घोषणा करिजी ही। तब सूं ले आज तक आपा सगला इण दिन ने वीर योद्धाओ ने याद करता थका इण दिन ने घणे कोड सूं मनावता आ रिया हा। पण म्हैने ओ बतावा थका घणो दुख होवे है कि आज आपणो मुल्क आजाद हुतो हुओ भी कई समस्या सूं घिरियोड़ो है। आतंकवाद हो या भ्रष्टाचार या फिर बेरोजगारी हो या फिर भूखमरी आपा सगला ने मिल न इण सु सामनो करणो है। अपरा पड़ौसी मूल्क भी आपाने आख्या दिखावे है। जिणने आपा सगला ने मिल न सबक सीखावणो है। इण खातिर इण मूल्क रा मोटियारा ने आगे आणो पड़सी। अर इण तिरंगे री रक्षा करणी पड़सी आखिर रे माय हु सगला मोटियारा ने ओइज कैवणो चावा हा।

जागो उठो मूल्क रा मोटियारो सूतो काम नी चाले ला।
दुश्मनो ने सबक सीखावण आपा सीमा पर चाला ला।

लेखक
(signature)
9509064670

www.rajteachers.com

www.rajteachers.com

अंत में :— जाग उठो ओ हिन्दुस्तानी और बन दण्ड मारो
कर दो सफाया उन जालिमों का जो आतंक फैलाते हैं।
जय हिन्द जय भारत

—: स्वतंत्रता दिवस भाषण :—

आदरणीय मुख्य अतिथि अध्यक्ष महोदयजी गाँव से पधारे हुए सज्जनों एवं मेरे प्यारे भाइयों और बहिनों मैं आपके सामने खड़ा होकर स्वतंत्रता दिवस के अवसर में दो शब्द बोलना चाहता हूँ गलती हो तो माफ करना।

सर्वप्रथम मैं देश के उन वीर शहीदों को श्रद्धांजली अर्पित करता हूँ जिन्होंने अपने प्राणों का बलीदान देकर हमें आजादी में जीना सीखाया।

नमन है उन वीरों को, नमन है उन शहीदों को, नमन है उन वीर सपूतों को नमन है इस मातृभूमी को, नमन है इस प्यारे वतन को।

जैसा की आप सभी को मालूम है। आज पूरा राष्ट्र — वा स्वतंत्रता दिवस मनाने जा रहा है। इसी कड़ी में हम भी आज यहा इक्कठे होकर वीर शहीदों को श्रद्धांजली अर्पित कर रहे है। 15 अगस्त 1947 से पहले हमारा देश गुलामी की जंजीरों से जकड़ा हुआ था और अंग्रेज भारत माता के सपूतों पर अत्याचार कर रहे थे। जिससे हर भारतवासी दुःखी था। दुःखों को दूर करने एवं अत्याचारों से मुक्ति दिलाने हेतू हमारे देश के लाखों वीर सपूतों ने मिलकर अंग्रेजों से लोहा लिया और आज ही के दिन 15 अगस्त 1947 के दिन भारत को आजाद कराया इसी कि याद में हम प्रतिवर्ष 15 अगस्त को स्वतंत्रता दिवस के रूप में मनाते आ रहे है। स्वतंत्रता प्रत्येक प्राणी को प्रिय होती है। क्योंकि स्वतंत्रता सब का जन्मसिद्ध अधिकार है। स्वाधीनता में ही सुख है। तभी तो तुलसीदास जी ने लिखा है। "पराधीन सपने हुँ सुख नहीं" लेकिन अब कुछ लोग हमें स्वतंत्रता से जीने नहीं दे रहे है। जिसे रोकने हेतू हर हिन्दुस्तानी को आगे आना होगा और ऐसी ताकतों का डटकर मुकाबला करना होगा।